

आधुनिक विश्व के परिप्रेक्ष्य में बर्ट्रेड रसेल के सामाजिक दर्शन का योगदान

डा. शालिनी सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, विद्यावती मुकन्दलाल गर्ल्स कॉलेज, गाजियाबाद

Email: sshalini_78@rediffmail.com



Received 10 July 2026

Accepted 15 July 2026

Published 30 July 2026

Corresponding Author:

डा. शालिनी सिंह

Email: sshalini_78@rediffmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i3.04>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश :

दर्शन का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं को समग्र रूप में देखना है। दर्शन का आशय उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित होना है। दर्शन वस्तुतः हमारे सीमित अनुभव जगत में विशेष घटनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करता है जो ब्रह्मांड को एकीकृत भी करता है। सामाजिक दर्शन मानव जाति की सामाजिक एकता पर अपना ध्यान केंद्रित करता है और एकता के संदर्भ में मानव जीवन के विशेष पहलुओं के महत्व की व्याख्या करना चाहता है। यह मूल्यों और आदर्शों का अध्ययन करना चाहता है तथा अपने तथ्यों को अन्य विज्ञानों से लेता है और उनकी व्याख्या करने के साथ ही उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास भी करता है। सामाजिक दर्शन मानव जाति की सामाजिक एकता पर अपना ध्यान केंद्रित करता है और एकता के संदर्भ में मानव जीवन के विशेष पहलुओं के महत्व की व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। सामाजिक दर्शन हमारे सामने सुखी जीवन के पदार्थ के रूप में मानव क्षमता की सामंजस्यपूर्ण पूर्ति की अवधारणा प्रस्तुत करता है। सामाजिक दर्शन अनुभव से असंबद्ध अमूर्त सिद्धांतों की स्पष्ट व्याख्या ही नहीं प्रस्तुत करता है, वरन् केवल उन्हीं सिद्धांतों को मानता है जिनकी जड़ें हमारे अनुभवों में निहित हैं। किसी भी दार्शनिक की मूल्य प्रणाली में जो भी संगठन और आत्म-स्थिरता पाई जाती है वह समाज द्वारा स्वीकृत मूल्य से ही प्राप्त होती है तथा प्रेरणा के रूप में कार्य करती है। पाश्चात्य यथार्थवादी दार्शनिकों में बर्ट्रेड रसेल ने विश्व के एक आदर्श नागरिक के निर्माण हेतु मानवीय मूल्यों के साथ ही एक व्यावहारिक व्यक्तित्व का सृजन करने की चेष्टा की है। उनके सामाजिक दर्शन में जीवन की व्यावहारिक समस्याएँ उनके विचारों में निहित हैं। रसेल के अमूर्त विचारों की दुनिया के सभी जटिल सिद्धांत अनुभव पर आधारित हैं तथा प्रारंभ से ही बर्ट्रेड रसेल का प्रमुख मूल्य 'स्वतंत्रता' रहा है। उनकी लगभग सभी सामाजिक नीतियाँ इसी से जन्मी हैं और व्यक्तिगत व्यक्तित्व विकास के लिए 'स्वतंत्रता' में उनके अत्यधिक विश्वास के संदर्भ में व्याख्या की जा सकती है। प्रस्तुत शोध आलेख में शोधकर्त्री ने बर्ट्रेड रसेल के सामाजिक दर्शन के अंतर्गत वर्णित अनेक सिद्धांतों की विवेचना एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। शोधकर्त्री को आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध आलेख आधुनिक विश्व के उत्तम नागरिकों के निर्माण के पथ पर अग्रसर युवाओं हेतु मील का पत्थर साबित होगा।

मुख्य शब्द : जीवन दर्शन, धार्मिक हठधर्मिता, नस्लीय सुधार, राजनीतिक महत्ता, आर्थिक संरचना, यौन नैतिकता, नागरिक एवं व्यक्तिगत नैतिकता।

प्रस्तावना-

मनुष्य हमेशा से ही एक चिन्तनशील प्राणी रहा है। उसने चिन्तन में न जाने कितनी सदियाँ व्यतीत की हैं। चिन्तन मनुष्य के केवल मानसिक ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में भी सहायक है। सम्पूर्ण विश्व में न जाने कितने प्रबुद्ध मनीषियों ने जन्म मात्र ही नहीं लिया है वरन् अपनी बुद्धि की कुशाग्रता से सर्वदा सम्पूर्ण मानव जाति का उत्थान भी किया है। अतः स्पष्ट है कि बुद्धि ही सर्वोच्च शक्ति है जो मानव को सही राह दिखाने में हमेशा ही कार्यकारी शक्ति के रूप में प्रेरणा देती रही है।

मनुष्य जाति कभी आदर्शवादियों कभी प्रकृतिवादियों तो कभी यथार्थवादियों के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने का निरन्तर प्रयास करती रही है परन्तु समय में परिवर्तन के साथ ही किसी को देखने का दृष्टिकोण भी निरन्तर परिवर्तन की राह पर अग्रसर रहा है। अतः जीवन के प्रत्येक पहलू का अलग-अलग दृष्टिकोणों से विवेचन तथा विश्लेषण करना ही दर्शन की सार्वभौमिक प्रकृति रही है। प्रमुखतः दर्शन चार प्रकार के होते हैं। सैद्धान्तिक दर्शन, प्रायोगिक दर्शन, तार्किक दर्शन तथा ऐतिहासिक दर्शन। सैद्धान्तिक दर्शन-तत्त्वमीमांसा तथा ज्ञान मीमांसा, प्रायोगिक दर्शन-नीतिशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक तथा सौन्दर्य, तार्किक दर्शन सही एवं गलत के बीच अन्तर तथा तथ्यों को सत्य की कसौटी पर खरा बताने एवं ऐतिहासिक दर्शन-मानव जाति के इतिहास की व्याख्या करने के साथ ही विभिन्न इतिहासकारों के जीवन दर्शन की झांकी भी प्रस्तुत करता है। उपरोक्त सभी दर्शनों में सामाजिक दर्शन 'मानव को एक सामाजिक प्राणी' होने के तथ्य की समुचित, विस्तृत एवं विशद व्याख्या प्रस्तुत करने में सक्षम है।

सामाजिक दर्शन के अन्तर्गत समाज के अर्थापन तथा सामाजिक प्रतिष्ठानों में विकसित किये जाने वाले मानवीय मूल्यों का विकास करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया भी निहित रहती है। अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक दर्शन जीवन के मौलिक सिद्धान्तों और धारणाओं की व्याख्या करने के साथ ही सामाजिक सम्बन्धों के सर्वोच्च आदर्शों का निरूपण भी करता है। सामाजिक दर्शन की प्रकृति की व्याख्या व्यक्ति और समाज के विभिन्न सम्बन्धों, विविध सामाजिक क्रियाकलापों, सामाजिक सिद्धांतों और सामाजिक-गतिविधियों का सम्यक् अध्ययन करने के उपरांत ही की जा सकती है।

प्रारम्भिक यूनानी विचारकों ने मानवीय व्यवहार पर सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के प्रभाव का प्रतिपादन किया। विभिन्न सामाजिक प्रश्नों की सम्यक् विवेचना का प्रथम श्रेय प्रसिद्ध यूनानी सम्प्रदाय 'सोफिस्ट' को प्राप्त है। प्रसिद्ध सोफिस्ट विचारक प्रोटोगोरस ने कहा था, 'मानव ही सब वस्तुओं का मापदण्ड है'। इनके उपरांत सुकरात, प्लेटो, अरस्तू इत्यादि ने भी भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किये। अरस्तू ने स्वीकार किया कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समानता एवं स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए क्योंकि ऐसे समाज में ही अच्छे नागरिकों का निर्माण सम्भव है। चाहे यूनानी दार्शनिक विचारधारा का काल हो या प्राचीन पाश्चात्य विचारों वाली यथार्थवादी दार्शनिकों की विचारधारा, सदैव एक आदर्शवादी समाज की स्थापना की ओर ही अग्रसर रही है। इन्हीं पाश्चात्य यथार्थवादी दार्शनिकों में बर्ट्रेण्ड रसेल का नाम सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि उन्होंने भी अपने जीवन दर्शन में एक आदर्श नागरिक के निर्माण हेतु मानवीय मूल्यों के साथ ही एक व्यावहारिक व्यक्तित्व का सृजन करने पर प्रकाश डाला है। बर्ट्रेण्ड रसेल ने एक सामाजिक दार्शनिक की तरह ही सामाजिक गुणों के विकास पर बल दिया है।

रसेल की रुचि सामाजिक दर्शन में जीवन के मध्यकाल में विकसित हुई जब उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका को देखा। उनके 'सामाजिक दर्शन' में जीवन की व्यावहारिक समस्याएँ उनके विचारों पर हावी रहीं हैं और उनके अमूर्त विचारों की दुनिया के सभी जटिल सिद्धांत अनुभव पर आधारित हैं। मेट्ज कहते हैं, 'रसेल ने आधुनिक जीवन को आंदोलित करने वाली लगभग सभी समस्याओं को उठाया है और स्वयं को भावुकता के साथ अभिव्यक्त किया है। अधिकतर विद्वान् उन्हें एक कट्टर योद्धा और समझौता न करने वाले आलोचक के रूप में देखते हैं, उनकी मुक्त आत्मा कुछ भी अछूता नहीं छोड़ती है जो अधिकार और परंपराओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों और पूर्वाग्रहों पर आधारित है। वह इस नीरस विश्व के सबसे मजबूत सचेतकों में से एक है जिसे इस युग ने पैदा किया है। एक अथक सुधारक, सभी सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक मूल्यों का संवाहक, अपने मिशन में एक अकथनीय विश्वास और अपने

स्वयं के व्यक्तित्व में पूर्ण विश्वास के साथ चलने वाले योद्धा हैं।¹ रसेल के बारे में मेट्ज का यह कथन काफी हद तक सही प्रतीत होता है क्योंकि रसेल ने स्वयं स्वीकार किया है कि यह हम ही हैं जो मूल्यों और अन्य इच्छाओं का निर्माण करते हैं। इस दायरे में हम राजा हैं और अगर हम प्रकृति के सामने झुकते हैं तो हम अपने राज्य को नीचा दिखाते हैं। हमें केवल ईश्वर द्वारा निर्मित प्रकृति के लिए ही नहीं वरन् स्वयं के लिए प्राकृतिक रूप से अच्छे जीवन का निर्धारण करना है। अतः उन्होंने निम्नलिखित सामाजिक सिद्धांतों का प्रतिपादन अपने ग्रन्थों में किया है।

जीवन दर्शन का सिद्धांत

रसेल के विचार से एक समुदाय की जीवन शक्ति पर जीवन के दर्शन का भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। आज के समय में मनुष्य के लिए जीवन का सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत दर्शन, उसकी आय है। रसेल जीवन के इस दर्शन को बहुत हानिकारक मानते हैं क्योंकि यह (आय) एक साधन के बजाय मानव जाति को ही एक साधन के रूप में प्रमाणित करती है। भौतिक वस्तुओं का आनंद एक रचनात्मक आवेग के बजाय धन के प्रति लोलुप हो जाना ही मानव के व्यक्तित्व का प्रतीक बन जाता है। यही कारण है कि रसेल जीवन के एक अलग प्रकार के दर्शन को स्वीकार करते हैं-“यदि जीवन को पूरी तरह से सफल बनाना है तो उसे (मानव को) जीवन का कुछ अंश मानवता की सेवा करनी चाहिए जो कुछ सामान्यतः मानव की पहुंच से परे ही प्रतीत होता है जीवन का कुछ अंश जो अवैयक्तिक है और मानव जाति से ऊपर है यथा ईश्वर या सत्य या सौंदर्य के प्रति भी समर्पित करना चाहिए। जो लोग केवल धन को जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं उनके लिए स्वयं के जीवन का कोई अर्थ नहीं होता है बल्कि उनका जीवन एक क्रमिक अवतार की तरह पृथ्वी पर अवतरित होता हुआ प्रतीत होता है।”²

हमारे मानव अस्तित्व का शाश्वत होना कल्पनातीत है। रसेल का दृढ़ विश्वास है कि शाश्वत सत्य की प्राप्ति करने हेतु जगत के साथ संपर्क करके ही दिव्यता की प्राप्ति करने के लिए अपना जीवन समर्पित करके, हम अपने जीवन को रचनात्मक बना सकते हैं। यद्यपि क्रूरता और संघर्ष के बीच पनपी नफरत हमें चारों तरफ से घेरने का प्रयत्न करती है।

अच्छे जीवन का सिद्धांत

बर्ट्रेण्ड रसेल के अनुसार, “अच्छा जीवन वह है जो प्रेम से प्रेरित और ज्ञान से निर्देशित होता है।”³ उनका मानना है कि एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेम और ज्ञान दोनों आवश्यक हैं-प्रेम एक मायने में अधिक मौलिक है क्योंकि यह बुद्धिमान लोगों को ज्ञान की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि जिससे वे प्रेम करते हैं उन्हें कैसे लाभान्वित करना है। अच्छे जीवन के एक घटक के रूप में ‘ज्ञान’ का अर्थ वैज्ञानिक ज्ञान से है अर्थात् वैज्ञानिक तथ्यों के बारे में ज्ञान। वह अच्छा जीवन जीने की रूढ़िवादी ईसाई अवधारणा से पूरी तरह असहमत हैं। उनका कहना है कि रूढ़िवादी ईसाई अवधारणा कि “सदाचारी जीवन ही अच्छा है और ‘पुण्य’ में ईश्वर की इच्छा का पालन करना निहित है और ईश्वर की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति की अंतरात्मा की आवाज के रूप में प्रकट होती है। यह पूरी अवधारणा ही मानव को निरंकुश बनाती है।”⁴

रसेल अच्छे जीवन की व्याख्या करते हुए कहते हैं, “एक व्यक्ति के पास एक अच्छी शिक्षा, मित्र, प्रेम, बच्चे (यदि वह उनकी इच्छा रखता है) तथा पर्याप्त आय होनी चाहिए ताकि वह उसे अभाव और गंभीर चिंता से बचा सके क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य और काम की इच्छा रखना विकास में बाधक नहीं होता है। ये सभी चीजें, प्रत्येक समुदाय की प्रकृति पर निर्भर करती हैं और राजनीतिक घटनाओं के घटित होने का कारण भी बनती है तथा एक व्यक्ति का अच्छा जीवन उसे एक अच्छे समाज में रहना सिखाता है।”⁵

धार्मिक हठधर्मिता के उन्मूलन का सिद्धांत

एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए धर्म एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि यह सबसे बड़ी शक्ति है जो एक समुदाय, जाति और राष्ट्र के जीवन को एकीकृत कर सकती है। रसेल ने धर्म के हठधर्मी पहलू की कड़ी आलोचना की है और आज के समय में इसकी आवश्यकता को महसूस किया तथा कहा है कि “पारंपरिक धर्म में विश्वास करने वाले लोग अनिवार्य रूप से भविष्य के बजाय अतीत को प्रेरणास्रोत के रूप में देखते हैं।”⁶ रसेल ईसाई होने के कारण

ईसा मसीह की शिक्षाओं में ज्ञान की तलाश करते हैं, जो प्रशंसनीय है क्योंकि यह जीवन के कई सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं के विकास के लिए काफी उपयोगी है। उनके विचार में कैथोलिक अनुयायियों के सामाजिक होने का तात्पर्य सभी धर्मों के लोगों को समान रूप से स्वीकार करना है ताकि धर्म, समाज को ढालने में एक शक्तिशाली शक्ति बन सके। वास्तव में एक धार्मिक व्यक्ति के व्यक्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरों के सुख और दुख में उतनी ही रुचि अनुभव करे जितनी कि स्वयं के सुख व दुःख में।

धर्म की इस मांग को पूरा करने के लिए सबसे पहले और सबसे बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है। बर्ट्रेण्ड रसेल का मानना है कि प्रस्तुत करने की नैतिकता की अपेक्षा पहल की नैतिकता को स्थापित करना है तथा चीजों को छोड़े जाने की बजाय आशा की नैतिकता को स्थापित करना है। हमें सोचना चाहिए कि यह संसार हमारा है और हमें इसे स्वर्ग बनाना है। हमें धार्मिक जीवन की तलाश करनी है परन्तु वह अंधविश्वासों पर आधारित नहीं होना चाहिए बल्कि यह इस सम्यक दृष्टि से प्रेरित होना चाहिए कि क्या मानव जीवन सृजन के आनंद से प्रसन्न होगा? वास्तव में धार्मिक व्यक्ति सकारात्मक प्राप्ति की प्रशंसा करेगा न कि नकारात्मक निष्पापता की। ऐसा होने पर जीवन का आनंद, त्वरित स्नेह तथा रचनात्मक आवेग द्वारा सम्पूर्ण विश्व, युवा और सुंदर होने के साथ ही स्फूर्ति की सुगंध से ओतप्रोत भी हो जाएगा।

नस्लीय सुधार का सिद्धांत

रसेल ने अपने समय की सामाजिक व्यवस्था के विषय में लिखा है कि-“जनमत के कानून की वर्तमान स्थिति और हमारी आर्थिक प्रणाली अगली पीढ़ी के आधे से अधिक लोगों के माता-पिता को सबसे खराब आधी आबादी बनाकर नस्ल की गुणवत्ता को कम करने की ओर अग्रसर है। साथ ही महिलाओं की स्वतंत्रता का दावा, विवाह के पुराने रूप को पुरुषों और महिलाओं दोनों के विकास में बाधा बना रहा है।”⁷ अपने समाज में मौजूद इन सभी कमियों को दूर करने के लिए रसेल सुझाव देते हैं कि एक नई व्यवस्था की आवश्यकता है। यदि यूरोपीय राष्ट्रों को पतन नहीं करना है तो पुरुषों और महिलाओं के सम्बंधों में खुशी और जैविक गंभीरता होने पर ही अच्छी नस्लें पैदा हो सकेंगी।

विवाह के प्रति रसेल का सुझाव है, “प्रेम वह है जो विवाह को आंतरिक मूल्य देता है और कला और विचार की तरह यह सर्वोच्च वस्तुओं में से एक है जो मानव जीवन को संरक्षित करने लायक बनाता है लेकिन प्रेम के बिना कोई विवाह अच्छा साबित नहीं हो सकता। सबसे उत्तम विवाह का उद्देश्य प्रेम की पूर्णता को प्राप्त करना है।”⁸ रसेल के विचार में असफल विवाहित जीवन नया बसंत होने के बजाय ‘मृत खुशियों की कब्रगाह’ है।

रसेल के अनुसार नई प्रणाली इस तथ्य पर आधारित होनी चाहिए कि बच्चे पैदा करना समुदाय की सेवा है न कि संतान होना माता-पिता को आर्थिक दंड का भागीदार बनाये। लेकिन अगर राज्य को बच्चों का खर्च उठाना है तो उसे यह जानने का अधिकार है कि पिता कौन हैं? नई व्यवस्था को यह स्वीकार करना होगा कि पुरुषों के निजी सम्बंधों से खुद को सरोकार रखना चाहिए और महिलाओं को छोड़कर जहां बच्चों का सम्बंध है। महिला एवं पुरुष के सम्बंधों को गुप्त और संतानहीन बनाने के प्रलोभनों को दूर करना होगा तथा कानून में संशोधन भी आवश्यक है।

राजनीतिक महत्ता की आवश्यकता का सिद्धांत

रसेल के अनुसार सर्वथा सर्वोपयोगी राजनीतिक सिद्धांत की तलाश के साथ ही आंदोलन की सर्वोत्तम दिशा की खोज करने की आवश्यकता है। व्यक्ति तथा समुदाय के विकास के साथ ही जीवन-शक्ति के विकास के सिद्धान्तों का संयोजन करना कोई आसान कार्य नहीं है। दोनों सिद्धांतों को संतुष्ट करने में सक्षम होने के लिए पहले हमारे व्यक्तिगत जीवन का एकीकरण होना आवश्यक है फिर समुदाय के जीवन का और व्यक्तित्व के बलिदान के साथ विश्व का विकास सम्भव हो पाएगा।

एक व्यक्ति के जीवन का आशय समुदाय के एक प्राणीमात्र के रूप में ही नहीं बल्कि मानव जाति के जीवन के सभी पहलुओं को कई अलग-अलग भागों के रूप में नहीं बल्कि समग्र रूप में लिया जाना चाहिए। इस तरह व्यक्ति के विकास को प्रेरणा मिलेगी जो अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को भी प्रेरित करने का साधन भी बनेगी। विकास के दोनों सिद्धांतों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना यद्यपि दुरूह कार्य है।

समाज की आर्थिक संरचना का सिद्धांत

आर्थिक दर्शन के क्षेत्र में रसेल ने कोई निश्चित सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया है। इस क्षेत्र में उन्हें अतीत के दो आर्थिक और सामाजिक सिद्धांतों यानि मार्क्सवाद और फासीवाद की आलोचनाओं के लिए जाना जाता है। मार्क्सवाद पर रसेल की आपत्तियाँ तार्किक होने के साथ-साथ मनमौजी भी हैं। फासीवाद पर उनकी आपत्तियाँ उतनी जटिल नहीं हैं जितनी कि मार्क्सवाद पर। साम्यवाद के मामले में उनकी असहमति साध्य के बजाय साधन के रूप में है।

रसेल फासीवाद और साम्यवाद दोनों के विरोध में हैं और मानते हैं कि समाजवाद और लोकतंत्र में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। एक ओर स्वतंत्रता हमेशा रसेल का प्रमुख मूल्य रही है; दूसरी ओर उनका कहना है कि सत्ता के संदर्भ में सभी सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण किया जा सकता है। वह सत्ता के साथ स्वतंत्रता को मिलाने का प्रयास करते हैं और यह प्रयास व्यक्ति और राज्य से संबंधित उनके लगभग सभी लेखों में परिलक्षित होता है। वह राज्य की उपयोगिता से इनकार नहीं करते हैं लेकिन लोकतांत्रिक सिद्धांतों का पालन दृढ़ और अनिवार्य शर्त की तरह स्वीकार करते हैं। बर्ट्रेण्ड रसेल आशा करते हैं कि भविष्य में लोकतांत्रिक समाजवाद अवश्य ही स्थापित होगा। एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जिसमें वह (मानव) स्वतंत्रता और अधिकार की समस्या को स्वयं हल कर सकेगा।

सामाजिक सद्भाव का सिद्धांत

रसेल के सभी राजनीतिक और आर्थिक लेखन में मौलिक अवधारणा सत्ता की है। रसेल शक्ति को 'इच्छित प्रभावों के उत्पादन' के रूप में परिभाषित करते हैं और इसका अर्थ है कि हमारी सफल स्वेच्छिक क्रियाएँ शक्ति या 'शक्ति के प्रेम' से उत्पन्न होती हैं। उनका विचार है कि शक्ति एक बुराई है यदि इसे समान रूप से साझा नहीं किया जाता है तो यह खतरनाक साबित होती है।

रसेल के लिए युद्ध सबसे बड़ी बुराई है। रसेल का विचार है कि युद्ध सरकारों की महत्वाकांक्षाओं या आर्थिक स्थितियों के कारण ही नहीं होता वरन् युद्ध का वास्तविक कारण मानव स्वभाव में निहित है। युद्ध, सामान्य मानव स्वभाव से उत्पन्न होता है। अंधा आवेग युद्ध का स्रोत है। यही आवेग राष्ट्रों को युद्ध के लिए प्रेरित करता है। भविष्य में युद्धों को रोकने के लिए कुछ नैतिक लोगों को, शांतिपूर्ण वातावरण बनाने हेतु प्रयास करना चाहिए। मानव प्रकृति को सुधारने और इस खतरनाक पागलपन को समाप्त करने के प्रयास किए जाने चाहिए। रसेल मानते हैं कि हम राज्य या अन्य राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट नहीं कर सकते। वह जोर देकर कहते हैं कि यदि राष्ट्रों को एक-दूसरे के साथ शांति से रहना है तो निजी सम्पत्ति का उन्मूलन एक आवश्यक कदम है। रसेल के अनुसार खुशियों से भरी दुनिया बनाना असंभव नहीं है, वास्तविक बाधाएँ तो मनुष्य के हृदय में होती हैं।

लॉर्ड रसेल की राय में राज्य का मुख्य कार्य आंतरिक रूप से कानून और पुलिस द्वारा और बाहरी रूप से सेना और नौसेना द्वारा अपने नागरिकों की रक्षा करना है। राज्य आवश्यक है, लेकिन समुदाय की सेवा करने से भी राज्य अधिक शक्तिशाली बनता है। उन्होंने यह भी बताने का प्रयास किया है कि "राज्य की आवश्यकता से अधिक शक्तियाँ हानिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं।"⁹

यौन नैतिकता का सिद्धांत

बर्ट्रेण्ड रसेल ने 'सेक्स' के बारे में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। वह स्कूली बच्चों को यौवन में प्रवेश करने से ठीक पहले सेक्स के बारे में ज्ञान देने के पक्ष में हैं। उनका सुझाव है कि निजी जिंदगी में भी सेक्स लाइफ को लेकर किसी तरह की वर्जनाएँ नहीं झेलनी चाहिए। सेक्स के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा कि अन्य आवेगों के साथ किया जाता है जो एक मानवीय चरित्र का निर्माण करते हैं। यौन ज्ञान को बिल्कुल किसी अन्य ज्ञान की तरह ही माना जाना चाहिए। रसेल एक मनोवैज्ञानिक की तरह सोचते हैं और व्यक्त करते हैं, "स्वतंत्रता के अलावा कुछ भी सेक्स के प्रति अनुचित पागलपन को नहीं रोक सकता है।"¹⁰

रसेल के अनुसार, "एक लड़के से यौन विषयों पर बातचीत करके यह सिखाया जाना चाहिए कि वह किस प्रकार उसे शारीरिक जोखिम से बचाएगा तथा विवाह के बाहर सेक्स पाप है; विवाह के भीतर सेक्स पाप नहीं है क्योंकि यह मानव प्रजाति के प्रसार के लिए आवश्यक है।"¹¹

चरित्र के संतुलित विकास के लिए, रसेल मुख्य रूप से चार गुणों को अपनाते हैं-“जीवन शक्ति, साहस, संवेदनशीलता और बुद्धिमत्ता।”¹² उनके विचार में उपरोक्त चार विशेषताओं वाले पुरुषों और महिलाओं का एक समुदाय निश्चित रूप से उन लोगों से श्रेष्ठ होगा जिनके पास ये गुण नहीं हैं। उपर्युक्त घटकों के अतिरिक्त आपसी सहयोग एक ऐसा घटक है जो किसी भी समाज के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। रसेल का मानना है कि ‘सहयोग एक अच्छे समाज का एक महत्वपूर्ण गुण है जिससे सभी सुखों को प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन हमारे परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, सहयोगियों, राजनीतिक दलों और राष्ट्र के सहयोग के बिना यह संभव नहीं है।

नागरिक और व्यक्तिगत नैतिकता का सिद्धांत

रसेल के अनुसार, “एक अच्छी दुनिया के लिए नागरिक और व्यक्तिगत नैतिकता समान रूप से आवश्यक है।”¹³ नागरिक नैतिकता के बिना, समुदाय नष्ट हो जाते हैं और व्यक्तिगत नैतिकता के बिना उनके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। सार्वजनिक कर्तव्य का पालन ही एक अच्छा जीवन नहीं है वरन् इसमें निजी उत्कृष्टता की खोज भी निहित है। यह व्यक्ति में है, संपूर्ण समुदाय में नहीं तथा जीवन के अंत तक परम मूल्य की खोज की जानी है। एक अच्छा समाज उन लोगों के लिए एक अच्छे जीवन का साधन है जो इसे बनाते हैं।

एक अच्छा जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति के जीवन पर बहुत अधिक प्रतिबंध नहीं होने चाहिए। उनका मानना है कि अवरोधों से भरा जीवन बहुत बेचैन और उत्साहविहीनता के कारण स्थायी नहीं रहने की संभावना है इसलिए रसेल सुझाव देते हैं-“जीवन की एकता को आकस्मिक इच्छाओं के दमन की मांग नहीं करनी चाहिए-जो मनोरंजन और खेल बनाती है; इसके विपरीत, जीवन के मुख्य उद्देश्य को सभी प्रकार के सुखों के साथ जोड़कर आसान बनाने के लिए वह सब कुछ किया जाना चाहिए जो उनके स्वभाव में नहीं है। आदतन मद्यपान, ड्रग्स, क्रूर खेल या दर्द देने में आनंद जैसी आदतें अनिवार्य रूप से हानिकारक हैं लेकिन सभ्य पुरुषों का अधिकांश मनोरंजन स्वाभाविक आनंद प्राप्त करता है। बेहतर समाज में जिस चीज की जरूरत है, वह वैराग्य या नीरस शुद्धतावाद नहीं है बल्कि बड़े रचनात्मक उद्देश्यों की ओर निर्देशित मजबूत आवेगों और इच्छाओं की क्षमता विकसित करना है।”¹⁴

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि “बर्ट्रेण्ड रसेल को एक सामाजिक दार्शनिक के रूप में स्थापित किया जा सकता है। स्वतंत्रता हमेशा उनका प्रमुख मूल्य रही है। उनकी सभी सामाजिक नीतियाँ इसी से उपजी हैं और उन्हें व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता में उनके अत्यधिक विश्वास के संदर्भ में स्वीकार किया जा सकता है।”¹⁵

रसेल एक अच्छे समाज की स्थापना करना चाहते हैं। उनका मानना था कि एक समाज मुख्य रूप से चार घटकों से बना है-राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक। उनके अनुसार किसी समाज की स्थिरता उसके विभिन्न घटकों के एक-दूसरे के साथ सामंजस्य पर निर्भर करती है। यदि सद्भाव भंग हो रहा है तो समाज के ये तत्व विघटन और विनाश की ओर प्रवृत्त होते हैं।

एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए उन्होंने सहयोग, न्याय, स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों पर जोर दिया। उनके अनुसार एक व्यक्ति एक अच्छे समाज में ही एक अच्छा जीवन जी सकता है क्योंकि ये एक अच्छे समाज की नींव के आवश्यक घटक हैं।

रसेल ने एक राजनीतिक सिद्धांत के बारे में भी अपने विचार दिए हैं जिसे व्यक्ति और समुदाय के स्वस्थ विकास के लिए खोजा जाना चाहिए। उनका कहना है कि व्यक्तियों और समुदायों के विकास और जीवन शक्ति को यथा संभव बढ़ावा दिया जाना चाहिए लेकिन एक व्यक्ति या एक समुदाय के विकास को एक-दूसरे के विकास की कीमत पर बढ़ावा नहीं देना चाहिए।

रसेल का मानना है कि जीवन को बढ़ावा देने या नष्ट करने में आर्थिक प्रणालियों का बहुत बड़ा प्रभाव है। उन्होंने मार्क्सवाद, फासीवाद और साम्यवाद सभी की आलोचना की है। उनके विचार में घृणा से सार्वभौमिक सद्भाव उत्पन्न नहीं किया जा सकता है। उन्होंने फासीवाद की घटना को जड़ से खारिज कर दिया है। फासीवाद के प्रति उनकी मुख्य आपत्ति मनुष्यों के बीच मौलिक भेद के सिद्धांत से संबंधित है।

बर्ट्रेड रसेल ने धर्म को एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में समझाया है जो एक समुदाय, जाति और राष्ट्र के जीवन को एकजुट कर सकता है। वह घोषणा करते हैं कि जो धर्म, मानवीय बुराइयों और सामाजिक शत्रुओं के प्रति असंवेदनशील हैं वे आधुनिक समाज को आकर्षित नहीं करते। उनकी दृष्टि में धर्म अंशतः वैयक्तिक और अंशतः सामाजिक है। जब ये दोनों तत्व आपस में मिल जाते हैं तभी धर्म एक शक्तिशाली शक्ति बन पाता है जो समाज को ढाल प्रदान कर सकता है।

रसेल ने विवाह और मानव जीवन में सेक्स के स्थान के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए हैं। रसेल सुझाव देते हैं कि प्रेम, विवाह को आंतरिक मूल्य देता है। उन्होंने इस तरह के विवाह की आलोचना की है जिसमें पत्नी के अधिकार को पति द्वारा प्रदत्त अधिकार के रूप में स्वीकार किया जाता है और पत्नी को स्वेच्छा से दासी के रूप में माना जाता है। उन्होंने तलाक को, दुखी वैवाहिक जीवन से बेहतर बताया है। सेक्स के बारे में उनका विचार है कि सेक्स के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा कि अन्य आवेगों के साथ किया जाता है जो एक मानवीय चरित्र का निर्माण करते हैं। सेक्स लाइफ से कोई वर्जना नहीं जुड़ी होनी चाहिए। उनके अनुसार बाहर से स्वस्थ दिखने वाले स्त्री-पुरुष प्राकृतिक आवेगों को नष्ट करके नहीं, बल्कि सुखी जीवन के लिए आवश्यक सभी आवेगों के समान और संतुलित विकास से उत्पन्न हो सकते हैं।

रसेल की दृष्टि में युद्ध मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु है। उन्होंने दो महान विश्व युद्ध देखे हैं और पीड़ित मानवता की भयानक छवि को चित्रित किया है और यह तथ्य भी स्थापित किया है कि मानव के सम्बन्ध में शांति के अलावा कुछ भी अपरिहार्य नहीं है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यवस्था में, समाज के आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे में और लोगों के जीवन को नियंत्रित करने वाली नैतिक संहिता में उपयुक्त परिवर्तन करके युद्ध की रोकथाम संभव हो सकती है।

इतने लंबे समय तक सामाजिक दर्शन के क्षेत्र में रहने के बाद रसेल अंततः जीवन के अध्यात्मवादी दर्शन में विश्राम लेते हैं। वह हमें 'शाश्वत' नामक किसी चीज से संपर्क करने का सुझाव देते हैं ताकि हम दुनिया भर में क्रूरता और संघर्ष और घृणा के बीच भी अपने जीवन को रचनात्मक बना सकें।

संदर्भ-

1. मेट्ज, आर0 (1950), 'ए हंड्रेड इयर्स ऑफ ब्रिटिश फिलॉसफी', जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 565-566
2. रसेल, बी0 (1916), 'प्रिंसिपल्स ऑफ सोशल रिकंस्ट्रक्शन' जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 155-156
3. एगनर, आर0ई0 एवं डेनन, एल0ई0 (एड0) (1961) 'द बेसिक राइटिंग्स ऑफ बर्ट्रेड रसेल' जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 359
4. वही, पृष्ठ 371
5. वही, पृष्ठ 381
6. वही, पृष्ठ 203
7. वही, पृष्ठ 195-196
8. वही, पृष्ठ 192
9. रसेल, बी0 (1919), 'प्रोपोज्ड रोड्स टू फ्रीडम: सोशलज्म, एनार्किज्म एंड सिंडिकेलिज्म' हेनरी हाल्ट एंड कम्पनी, न्यूयार्क, पृष्ठ 149
10. एगनर, आर0ई0 एवं डेनन, एल0ई0 (एड0) (1961), 'द बेसिक राइटिंग्स ऑफ बर्ट्रेड रसेल', जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 419
11. एगनर, आर0 ई0 (2004), 'बर्ट्रेड रसेलस बेस्ट' रूटलेज पब्लिशर्स, लंदन, पृष्ठ 76
12. एगनर, आर0ई0 एवं डेनन, एल0ई0 (एड0) (1961), 'द बेसिक राइटिंग्स ऑफ बर्ट्रेड रसेल', जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 353
13. रसेल, बी0 (1916), 'प्रिंसिपल्स ऑफ सोशल रिकंस्ट्रक्शन' जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, लंदन, पृष्ठ 239-240
14. वही, पृष्ठ 245

15. सिंह, एस0 (2013), 'ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द एजुकेशनल कन्ट्रिब्यूशन्स ऑफ बर्ट्रेड रसेल एंड सर्वपल्ली राधाकृष्णन एन एनालिटिकल अप्रोच' पी0एच0डी0 थीसिस, डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.